62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 645 Participant Code: 101

हिंदी निबंध

हमारी संस्कृति और खेती

भारत जैसे महत्व राज्य को किसने महत्व जैसे बनाया, इस प्रश्न के उत्तर हम सब जानते है। लाखों साल पहले, हमारे पूरविका ने इस देश को ऐसे बनाने में मदद किया। जब वह, इस जगह पर पहली बार पहला कदम रखा, तब उन्हें क्या करना, कुछ नहीं पता था। शिर्फ वह यह सोचते थे की खाना कैसे लभ्य करे। भोजन के तलाश में उसने पहली बार खेतों पर पड़ी हुई खाने के सामग्रियों को भोजन करने लगे। वह लोग समज गये की भोजन प्रदान करनेवाले पौदों को पालन करने से, हमारा भूख निकल जाता है,। इसकेलिए उन्होंने बड़े बड़े लबे जगह पर भोजन देने वाले पौदों को लगाया। इस प्रवर्ती हम आज भी भारत पर देख सकते है। यह सिर्फ एक शुरुवात था।

आज हम देख सकते हैं कि हमारे देश में लगभग 50% लोग खेती के परिपालन में काम कर रहे हैं। ढेर सारे चावल, दाल, टमाटर, आलू, बैंगन सबकुछ आज मिलते हैं। इस प्रकार के विविध तरह भोजन सुलभ होने के कारण किसान हैं। वह दिन रात बहुत कठिनता से गुजरकर हमारे लिए यह सब बनाते हैं। और क्या देश उनके लिए कुछ कर रहे हैं? नहीं, हम सिर्फ हमारे कामकाज देखकर चले जाते हैं, दूसरों के दुःख तो हमारा कभी नहीं होते, यह सब सुधरना चाहिए। मध्य प्रदेश, केरल, तमिल नाडु, जैसे कई जगहों पर बहुत सारे खेत की दिख जगह दिखते हैं। पुराने काल से आज तक हम किसानों पर आश्रित होते हैं। जो सब सब्जियाँ, चावल, गेहूं, जो कुछ वो बनाते हैं, सबकुछ हम खरीद कर हमारे घरों में अच्छे-अच्छे भोजन पकाते हैं। पर आज कल क्या हो रहा है? हमारे सरकार के

किसने मिट्ठी पर फेंक दिया? जाने अनजाने हम यह सब जानना चाहिए। हमारे भोजन, जो इस देश पर उत्पादन करते हैं/ या बनाता है, वो बहुत अच्छी और हमारे स्वास्थ्य को और भी अच्छे बनाने वाले थे। पर आजकल जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक नहीं है और हम उसके खिलाफ जाना चाहिए।

अगर हम शांति से सोचें, कि जो भोजन आज हमने खाया है, क्या वो शरीर के लिए अच्छा है? क्या वह चावल अच्छा है? वह चावल और उसके साथ जो कुछ भी हमने खाया है, वो सबकुछ बड़ा स्वादिष्ट हो या, क्या इस स्वाद हमारे स्वास्थ्य की मिट्ठी पर फेंक देगें? यह सब कुछ हमें सोचना चाहिए। आधुनिक भारत में, शुद्धता और भोजन में फरक बहुत कम थी। किसान सबकुछ नहीं हाथ, और शुद्ध सामग्रियों से, बिना कुछ मिलाने से बनाते थे। पर

आज हम देख सकते हैं, कि बहुत सारे बीमारियाँ भोजन के कारण फैल रहे हैं। यह सब बुरे कर्मकों के कारण होते हैं, और पैसों के लालच में बहुत सारे दूकान्दार भी ढेर सारे हानिकार सामाग्रियों को भोजन में मिलाते हैं। इसी के कारण आज कल के खेत-मजूरी काम वालों को कोई भी इज्जत नहीं देते। यह सब हमें बंद करना चाहिए। अच्छे तरह से भोजन प्रदान करनेवाले पेड़ों को पालन करना हमारा आवश्य है, तो इसीलिए, ऐसे घटिया दूकानदारों को खिलाफ कंप्लेंट करना चाहिए। इसके कारण ढेर सारे किसानों के जीवन भी बच जाता है।

आज कल तो हम खेतों को कहाँ देखते हैं? क्या अब चावल सुलभ है? क्या गेहूं मिलते हैं हमें? इसके कारण क्या है? तब जब हम इसके कारण के लिए खोजते हैं, तब हमें पता लगता है कि पैसों के कारण यह सब होरहे हैं। पर क्यों?

आजकल के युव पीढ़ी को सिर्फ पैसा चाहिए और कुछ नहीं। सभी जगह पर बड़े-बड़े माल्स, घर, दूकान, मकान सबकुछ बनाते हैं, क्या हम उसने ये कभी सोचा कि कितने किसानों के पेट खाली होगा? यह मकानों को परिपालन करनेका भविश्य क्या होगा? हमें ये समझना चाहिए कि ढेर सारे मकानोंको बनाकर हम हमारे पेट को अधिक समय भरा हुआ नहीं रख सकते हैं। पर आजकल के बच्चे, या लोग पैसों के पीछे भागकर हमारे संस्कार को भूल रहे हैं। हमारे देश में कृषि या खेती के संस्कार बहुत पुरानी है। और इसके कारण ही हम सब आज यहाँ जिंदा, खुशी से बैठ रहे हैं। उन किसानों के मेहनत हम कभीभी बूरी तरह नहीं देखना चाहिए। वह लोग हमारे स्वास्थ्य और जीवन के लिए काम कर रहे हैं। अगर हम देखें तो हम देख सकते हैं, कि

सालों पहले दिनबंधु मित्रा जी ने नील
दरपन नामक पुस्तक लिखा है।
जिसमें इन्डिगो परिपालन करने
वाले किसानों के दुःख के बारे में बनाया
है। जब पैसों के लिए ब्रिटीष ने हमारे
देश के किसानों से इन्डिगो का खेती
शुरु करने को कहा, तब वो तयार भी नहीं
थे, फिर उसके ज़िद के कारण किसानोंने
उसके जगह पर इन्डिगो को बनाया। पर
इसका भविष्य बहुत बुरा होगया। उस
किसानों को कुछ भी अच्छा नहीं मिला।
न मानन न पैसा, इस के कारण वह
किसानों ने ही इन्डिगो रिवोल्ट शुरू
करलिया। और यह इन्डिगो का खेती नश
करदिया। इस आधुनिक घटना से हमें
यह समझ आती है, कि हमारे पूर्वजों
ने बहुत कष्टता सहकर आज को यह
हालत हुआ है। जब भारत स्वतंत्र
हुआ, तब से हम बड़े-बड़े योजनाओं के

आयुत्रण करते हैं। इस खेती के लिए सड़क, ड्राम, ब्रिड्जस, पानी की लभ्यता सबकुछ हासिल करलिआ है। हम बहुत अभिमान से कह सकते हैं कि भारत का पुरोगति खेती से बड़ गया। इस खेती के कारण ही, भारत पर पैसा और भोजन लभ्य होता है। मकानों पर सिर्फ यह ही होता है। सुबह से शाम तक ए.सी में बैठते ~~हुआ~~ हुए लापटोप या फोन में कुछ न कुछ करते हैं और फिर रात होने के आरंभ मे घरकेलिए निकलते हैं। पर खेती ऐसे आसान नहीं है। सुबह से शाम या रात तक ~~खे~~ खेतों में काम करना पड़ता है। पौधों को परिपालन करना, दुष्ट कीड़ाको हटाना, पानी देना, मिट्टी अच्छे से सुखाना, सब कुछ करने के ~~बाद~~ बावजुत इस किसानों को कुछ भी वापस नहीं मिलता। समाज उन लोगों को छोटे समज कर उन्हें देखकर हँसते हैं। जब

वह पास आकर बैठते हैं, तब लोग
चिड़ाते हैं। कहते कि वह अशुद्ध हैं,
बुरा है, उनसे बदबू आ रहे हैं, आदि
सबकुछ कहते हैं। पर जब इनके हाथों से
हुआ बने हुए सब्जियाँ, चावल, सबकुछ
हम खाते हैं, तब हमें कुछ बदबू, कुछ नहीं
आते हैं। यह कैसा समाज है? क्या हम
भी ऐसे तरह बढ़े होने के परिश्रम कर रहे
हैं? क्या हम किसानों के लिए हमारे शब्द,
आवाज़ उठा नहीं सकते? हमारे संस्कार
इन लोगों के वजह से ऐसा जा रहे हैं।
एक अच्छे समाज बनाने केलिए इन किसानों
ने बहुत सारी मेहनत किया हम। इस मेहनत
को हम आँख बंदकरकर नहीं, बल्कि खुलकर
देखना चाहिए। मिट्टी एक बुरा सामग्री
नहीं है। अगर हम उसको प्यार करेंगे
तब हम उसके महत्व को समझ लेंगे।

इस मकानों को हम
बढ़ने नहीं दे सकते हैं, क्योंकि आजकल

हम देख सकते हैं कि, हमारे केरल में ही चावल के कमी है, और तमिल नाडु, कर्नाटका से आनेवाले चावल और बाकी सारे सामग्रियों से हमारा घर चलता है। पोषक भरेहुए आहार हम नहीं खापाते है, क्योंकि हमें नहीं पता की कैसी तरह की हानिकारिक वस्तुओं का उपयोग करकरे यह सबकुछ बनाये हुए हैं। इसके कारण ही ढेर सारे बीमारियाँ बच्चों में और बड़ों में देखता जाता है। फूड़ पोयिसणिंग के कारण भी यह सब होते हैं। अमोणियम फोस्फेट जैसे हानिकारिक वस्तुओं का उपयोग करकरे बनायाहुआ यह खाने की सामग्रियों को हम कुछ भी करनहीं सकते। उसमेंसे एकमात्र निवारण हम बदल सकते है, पर फिरभी पूरा नहीं। इसीलिए बहतर है, कि जो सब्जियाँ हमारे देश में पर लभ्य होते हैं, उसे हम खा लें। इस लभ्यता के लिए हम हमारे देश में खेतों के संरक्ष

संख्या बढ़ानी चाहिए। यह अगर हमें साध्य करना है, तो हमें पहले पैसों के पीछे भागने के ज़िद तोड़ देना चाहिए। और किसानों को मानवों के तरह समजकर उससे मानवीकता से पहचान करलेना चाहिए। उसके साथ हाथ मिटाकर, उसके सहायता करकर हम हमारे देश के संस्कार को पाया जाते हैं।

आधुनिक लोगों ने कभीभी पैसों के पीछे भागना नहीं सीखा है। और वह बहुत कठिनाधवानी और देश केलिए काम करनेवालों में से एक होते हैं। इसी कारण हमारे संस्कार कभीभी नष्ट नहीं हुआ है। भारत अपने खेतों के वजह से और खेती की वजह से अभिमानित हुआ है। इसी कारण के बापजूद ही वह ~~प्रसीध~~ प्रसिद्ध राज्य में से एक हुआ है। इस खेत मजूरी में ही ~~इ~~ भारत को भारत बनाया है, और बाकी राज्यों या देशों से अलग बनाया है। इस खेती, खेती, किसान

सब कुछ हमारा सरकार के विभाग हैं। जब हम भारत के माप देखते हैं, तब हम समझते हैं, कि नॉर्थ इन्दया प्लेन में बहुत अधिक मात्रा में खेती हो रहे हैं, और इसीकारण उसी जगहों में भूखे मरनेवाले लोगों के संख्या भी बहुत कम हैं। पंजाब, हरयाना जैसे देशों में चावल, या गेहूं के कमी नहीं हैं। वहा 75% लोग भी खेतों में काम करने वाले हैं। और वह लोग अपनेआप ही अभिमान से कहते हैं कि इस देश की सेवा करते हुए उसे कोई नष्ट नहीं हुआ हैं, पर वह अपने आप खुश होकर कह सकते हैं, कि वह इस देश के संस्कृति पालन करनेवालों में से एक हो सकता हैं।

यह हमारा कर्तव्य हैं, कि हमारे देश की संस्कृति हम नष्ट न करें, उसे फेंकने के अलावा उसे बढ़ाने के लिए कोशिश कर सकते हैं। समान हमारा

साथ दो, या ना दो, हम हमारे देश के अच्छे पुरोगती के लिए काम कर रहे। इसपर अपमानी नहीं अभिमानी होना चाहिए। हम सब देशवासियों से हम देश के अच्छायी के लिए कुछ भी करनेवाले हैं। तो हम ये भी कर सकते हैं। देश के संस्कृति को जोड़कर हमारे पास रखलेते हैं। किसानों को उसके कठिनाध्वान के उपहार जैसे हमारे मानवीकता देते हैं। खेतों को बचाते हैं। अगर हम ये नहीं करपाई, तो हमारे भावी लोगों के लिए इस देश में रहना मुश्किल होगा। मकानों को को बनाने से बंद करवाएंगे, यह कैसे? जो मकान जिसमें बूरी तरह की हानिकारिक वस्तुओं का उपयोग होता है, इसके खिलाफ कंप्लैंट फैल करसकते हैं। अगर ये हानिकारिक वस्तुओं हमारे भक्ष्य खेतों के बीच पहूँचेंगे तो, ये उस पौदों का नाश करने के बावजूत हमारे सेहत को भी नाश करदेता हैं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

यह हम होने नहीं दे सकते हैं। खेतों के अलावा हमारा राज्य सिर्फ एक मामूली राज्य हो जाएगा। हमारे संस्कार हम ऐसे वैसे तोड़ नहीं सकते हैं। फेंकने के अलावा जोड़ने के सीखते हैं। हमारा राज्य हमारा घर जैसा ही है। हमारे खेत के लिए, और राज्य के संस्कृति को बचानेकेलिए हम खेतों को नष्ट करनेकेलिए तैयार नहीं होंगे। कोई भी कह ले, हमें हमारा संस्कार और राज्य से मूल्य और कुछ भी नहीं है। इसीलिए आनेवाले भावी लोगों के और युव पीढ़ीयों को सलाह देने के ऊपर कामकरके, हमारे प्रवर्त्ती में हम प्यार दिखा ~~सकते~~ सकते हैं। "देश की अभिमान, हमारा अभिमान", "किसानोंको बचाओ, हमारे संस्कार को बचाओ"।

जय हिंद।